v/;k; & iFke

iLrkouk

''ईश्वर की प्रदान की गई नेमतों में आँखें सबसे सुन्दर और महत्वपूर्ण देन है, इनके बिना हम अच्छा, बुरा, रंगीन, रंगहीन तथा पास व दूर कुछ नहीं देख पाते।

उसने मनुष्य को धरती पर लाकर सबसे पहले प्रकृति का निर्माण किया और उस धरातल को विभिन्न रंगों से सजाया, आज हम उन रंगों से अपने संसार को सजाते हैं। अगर वे रंग न होते तो शायद हमारे पास वस्तु पहचानने का कोई जरिया न होता।''

जिस रंग में हम खुद को रंग लेते हैं वह हमारा व्यक्तित्व दर्शाता है। आज रंग सिर्फ घर सजाने का माध्यम ही नहीं अपितु व्यवसाय, धर्म, बौद्धिक स्तर, आर्थिक स्तर व दुख और सुख का सूचक भी बन गये हैं। जिन कारकों द्वारा हम अपना मानसिक स्तर प्रदर्शित करते हैं, रंग उनमें सर्वप्रथम है।

रंग हजारों वर्षों से हमारे जीवन में अपनी जगह बनाए हुए हैं। मानव जीवन रंगों के बिना उदास और सूना है। मुख्यतः सात रंगों की इस सृष्टि में हर एक रंग हमारे जीवन पर प्रभाव छोड़ता है। कोई रंग हमें उत्तेजित करता है तो कोई रंग प्यार के लिये प्रेरित करता है। कुछ रंग हमें शांति का एहसास कराते हैं तो कुछ रंग मातम का प्रतीक हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि हमारे जीवन पर रंग का बहुत असर है। हर एक रंग अलग–अलग इंसान को अलग–अलग तरीके से आन्दोलित करता है।

jxk dk bfrgkl –

रंग हजारों वर्षो से हमारे जीवन में अपनी जगह बनाए हुए हैं। प्राचीनकाल से ही रंग कला में भारत का विशेष योगदान रहा है। मुगल काल में भारत में रंग कला को अत्यधिक महत्व मिला। यहाँ तक कि कई नये–नये रंगों का आविष्कार भी हुआ। इससे ऐसा आभास होता है कि रंगों के उपलब्ध कठिन पारिभाषिक नामों के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं में उनके सुगम नाम भी विद्यमान रहे होंगे। यहाँ आजकल कृत्रिम रंगों का उपयोग प्रचलन में है वहीं प्रारंभ में लोग प्राकृतिक रंगों को ही उपयोग में लाते थे। उल्लेखनीय है कि मोहनजोदड़ो हौर हड़प्पा की खुदाई में सिंधु घाटी सभ्यता की जो चीजें मिलीं उनमें ऐसे बर्तन और मूर्तियाँ भी थीं, जिन पर रंगाई की गई थी। उनमें एक लाल रंग के कपड़े का टुकड़ा भी मिला। विशेषज्ञों के अनुसार इस पर मजीठ या मजिष्ठा की जड़ से तैयार किया गया रंग चढ़ाया गया था। हजारों वर्षों तक मजीठ की जड़ और बल्कम वृक्ष की छाल लाल रंग का मुख्य स्रोत थी। पीपल, गूलर और पाखर जैसे वृक्षों पर लगने वाली लाख की कृमियों की लार से महाबर रंग तैयार किया जाता था। पीला रंग और सिंदूर हल्दी से प्राप्त होता था।

jxk dk ukedj.k :–

हर सभ्यता ने रंगों को अपने लिहाज से गढ़ा है लेकिन किसी ने भी ज्यादा रंगों का नामकरण नहीं किया। ज्यादातर भाषाओं में रंगों को दो ही तरह से बांटा गया है। पहला सफेद यानी हल्का और दूसरा काला यानी चटक अंदाज लिए हुए।

- अरस्तु ने चौथी शताब्दी के ईसापूर्व में नीले और पीले की गिनती प्रारंभिक रंगों में की। इसकी तुलना प्राकृतिक चीजों से की गई जैसे सूरज–चांद, स्त्री–पुरूष, फैलना–सिकुड़ना, दिन–रात, आदि। यह तकरीबन दो हजार वर्षों तक प्रभावी रहा।

- 17–18वीं शताब्दी में न्यूटन के सिद्धांत ने इसे सामान्य रंगों में बदल दिया। 1672 में न्यूअन ने रंगों पर अपना पहला पेपर प्रस्तुत किया था जो बहुत विवादों में रहा।

- गोथे ने न्यूटन के सिद्धांत को पूरी तरह नकारते हुए थ्योरी ऑफ कलर्स नामक किताब लिखी। गोथे के सिद्धांत अरस्तु से मिलते हैं। गोथे ने कहा कि गहरे अंधेरे में से सबसे पहले नीला रंग निकलता है, यह गहरेपन को दर्शाता है। वहीं उगते हुए सूरज में से पीला रंग सबसे पहले निकलता है जो हल्के रंगों का प्रतिनिधित्व करता है।

- 19वीं शताब्दी में कलर थेरेपी का प्रभाव कम हुआ लेकिन 20वीं शताब्दी में यह नए स्वरूप में पैदा हुआ। आज के कई डॉक्टर कलर थेरेपी को इलाज का बढ़िया माध्यम मानकर इसका इस्तेमाल करते हैं।

- रंग विशेषज्ञ मानते हैं कि हमें प्रकृति से सानिध्य बनाते हुए रंगों को कलर थेरेपी के बजाय जिन्दगी के तौर पर अपनाना चाहिए। रंगों को समझने में सबसे बड़ा योगदान उन लोगों ने किया जो विज्ञान, गणित, तत्व विज्ञान और धर्मशास्त्र के अनुसार काम करते थे।

- ऑस्टवाल्ड नामक वैज्ञानिक ने आठ आदर्श रंगों को विशेष क्रम से एक क्रम में संयोजित किया। इस चक्र को ऑस्टवाल्ड वर्ण चक्र कहते हैं।

jxk d ifjHkkf"kd uke :

दुनियाँ भर में जितने भी रंग मिलते हैं, उसे हम मुख्यतः दो वर्गों में बाँट सकते हैं।

- रंगीन वर्ण में लाल, पीला, नीला, बैंगनी इतयादि रंग आते हैं।

- जबकि बदरंग वर्ग में काला, सफेद और कई छवियों के स्लेटी रंग सम्मिलित हैं।

स्लेटी रंगों की अनेकानेक छवियाँ हैं। कोई स्लेटी सफेद के निकट होता है तो कोई सफेद से अत्यन्त दूर होकर काले रंग के करीब आ जाता है। स्लेटी छवियाँ को काले और सफेद के बीच एक श्रृंखला में भी श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। श्रृंखला को पैमाने का भी रूप दिया जा सकता है, जिसके केन्द्र का रंग काले और सफेद के समान स्तर का स्लेटी होगा। काले रंग को शून्य संख्या देकर छवि को क्रमशः आगे का अंक प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार अधिकतम संख्या अंक सफेद को दिया जाता है।

vU; Hkk"kkvksa esa uke

भाषा शब्द	हिन्दी वर्ण	उड़िया रंग	उर्दू रंग	कन्नड़ बण्ण	कश्मीरी रंग	असमिया रं बरण बोल	गुजराती रंग
भाषा शब्द	उड़िया रंग	तमिल निरम, चायम्	तलुगु रगु, वन्ने	नेपाल	पंजाबी रंग	बांग्ला रंग,वर्ण	तोडो
भाषा शब्द	मणिपुरी	मराठी रंग,वर्ण	मलयालम निरं,वर्ण	मैथिली	संथाली	सिंधी रंगु	अंगेजी Colour

jxksa dk egRo :

रंगों को देखकर ही हम स्थिति के बारे में पता लगाते हैं। इंद्रधनुष के रंगों की छटा हमारे मन को बहुत आकर्षित करता है। हम रंगों के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। रंगों के बिना हमारा जीवन ठीक वैसा ही है, जैसे प्राण बिना शरीर। बाल्यावस्था में बच्चे रंगों की सहायता से ही वस्तुओं को पहचानते हैं। युवक रंगों के माध्यम से ही संसार का सृजन करता है। वृद्ध की कमजोर आँखें रंगों की सहायता से वस्तुओं का नाम प्राप्त करती है।

मेंहदी शरीर को सजाने की एक श्रृंगार सामग्री है। इसे हाथों, पैरों, बाजुओं आदि पर लगाया जाता है। 1990 के दशक से ये पश्चिमी देशों में भी चलन

में आया है। मेंहदी को हिना भी कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मेंहदी को लगाना शुभ माना जाता है। मेंहदी का इस्तेमाल गर्मी में ठंडक देने के लिए भी किया जाता है। कुछ लोग विशेषकर बूढ़े अपने सफेद बालों में मेंहदी लगाकर बालों को सुनहरे बनाने की कोशिश भी करते हैं।

lkr jf'e;k –

सूर्य की प्रकाश किरणों में सात रंग हैं। जिन्हें वेदों में सात रश्मियाँ कहा गया है–

lIrjf'ej/ke rkfl –

अर्थात् सूर्य की सात रश्मियाँ हैं। सूर्य की इन रश्मियों के सात रंग हैं – बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल। इन्हें तीन भागों में बाँटा गया है –

- गहरा
- मध्यम
- हल्का

इस प्रकार सात गुणित तीन से 21 प्रकार की किरणें हो जाती हैं। अथर्व वेद में कहा गया है –

;s f="kk% ifj;fur foÜok #ikf.k fcHkr%

अर्थात् यह 21 प्रकार की किरणें संसार में सभी दिशाओं में फैली हुई हैं तथा इनसे ही सभी रंग–रूप बनते हैं। वेदों के अनुसार संसार में दिखाई देने वाले सभी रंग सूर्य की किरणों के कारण ही दिखाई देते हैं। सूर्य की किरणों से मिलने वाली रंगों की ऊर्जा हमारे मानव शरीर को मिलें इसके लिए ही सूर्य को अर्ध्य देने का धार्मिक विधान है। रंगों का महत्व हमारे जीवन में पौराणिक काल से ही चला

आ रहा है। हमारे देवी–देवताओं को भी कुछ खास रंग विशेषकर प्रिय हैं। यहाँ तक कि ये विशेष रंगों से पहचाने भी जाते हैं।

fi; jx	noh&nork	egRo
लाल	लक्ष्मी	माँ लक्ष्मी को लाल रंग प्रिय है। लाल रंग हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।
पीला	कृष्ण	भगवान कृष्ण को पीतांबरधारी भी कहते हैं, क्योंकि वे पीले रंग के वस्त्रों से सुशोभित रहते हैं।

oKkfud igy :

लोहे का एक टुकड़ा जब धीरे–धीरे गरम किया जाता है तब उसमें रंग के निम्न परिवर्तन दिखाई देते हैं। पहले तो वह काला दिखाई पड़ता है, फिर उसका रंग लाल होने लगता है। यदि उसका ताप बढ़ाते जाएँ तो उसका रंग क्रमशः नारंगी, पीला इत्यादि हेाता हुआ सफेद हो जाता है। जब लोहा कम गरम होता है तब उसमें से केवल लाल प्रकाश ही निकलता है। जैसे–जैसे लोहा अधिक गरम किया जाता है वैसे–वैसे उसमें से अन्य रंगों का प्रकाश भी निकलने लगता है। जब वह इतना गरम हो जाता है कि उसमें से स्पेक्ट्रम के सभी रंगों का प्रकाश निकलने लगे तब उनके सम्मिलित प्रभाव से सफेद रंग दिखाई देता है।

यदि कोई वस्तु एक से अधिक रंग परावर्तित करती है, तो उसका मिला हुआ रंग दिखाई पड़ता है। पीली वस्तु लाल और हरे रंग का प्रकाश परावर्तित करती है। चूँकि लाल और हरे रंग का प्रकाश मिलकर पीला प्रकाश बनता है, अतः वह वस्तु हमें पीली दिखाई देती है। पारदर्शी रंगीन वस्तुएँ कुछ रंग के प्रकाश को तो अपने में से पार जाने देती हैं और शेष प्रकाश को अवशोषित कर लेती हैं। नीले शीशे में से होकर केवल नीला प्रकाश ही जा पाता है और शेष प्रकाश अवशोषित हो जाता है। यदि पारदर्शी वस्तुओं में से होकर एक से अधिक रंग का प्रकाश गुजरता है, तो उन रंगों का सम्मिलित प्रभाव दिखाई देता है।

v/;kfRed {k= e egÙo

आध्यात्मिक क्षेत्र में रंगों का सर्वाधिक महत्व 'थियोसोफिकल सोसायटी' ने दिया है। इस सोसायटी के अनुसार, मानव शरीर के अतिरिक्त एक सूक्ष्म शरीर भी होता है, जो चारों तरफ अण्डाकृति चमकीले धुंध से घिरा रहता है। अध्यात्मिक दृष्टि से उत्पन्न होने से अण्डाकृति में विभिन्न रंग दृष्टिगोचर होते हैं, जिनके आधार पर किसी शरीर के विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारी मिल सकती है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों सेम्योन और वेलेन्टीना किरलियान ने सिद्ध कर दिखाया है कि कुछ पदार्थो के आसपास एक ऊर्जा क्षेत्र विद्यमान रहता है।

हम हमेशा से देखते आए हैं कि देवी–देवताओं के चित्र में उनके मुख–मंडल के पीछे एक आभामंडल बना होता है। यह आभा मंडल हर जीवित व्यक्ति, पेड़–पौधे आदि में निहित होता है। इस आभामंडल को किरलियन फोटोग्राफी से देखा भी जा सकता है। यह आभामंडल शरीर से 2'' से 4'' इंच की दूरी पर दिखाई देता है। इससे पता चलता है कि हमारा शरीर रंगों से भरा है। हमारे शरीर पर रंगों का प्रभाव बहुत ही सूक्ष्म प्रक्रिया से होता है। सबसे उपयोगी सूर्य का प्रकाश है। इसके अतिरिक्त हमारा रंगों से भरा आहार, घर या कमरों के रंग, कपड़े के रंग आदि भी शरीर की ऊर्जा पर प्रभाव डालते हैं। इलाज की एक पद्धति 'रंग चिकित्सा' भी रंग पर आधारित है। मनोरोग संबंधी मामलों में भी इस चिकित्सा पद्धति का अनुकूल प्रभाव देखा गया है। सूर्य की किरणों से हमें सात रंग मिलते हैं। इन्हीं सात रंगों के मिश्रण से लाखों रंग बनाए जा सकते हैं। विभिन्न रंगों के मिश्रण से दस लाख तक रंग बनाए जा सकते हैं लेकिन सूक्ष्मता से 378 रंग ही देखे जा सकते हैं। हर रंग की गर्म और ठंडी तासीर होती है। हरे, नीले, बैंगनी और इनसे मिलते–जुलते रंगों का प्रभाव वातावरण में ठंडक का एहसास कराता है। वहीं दूसरी ओर पीले, लाल व इनके मिश्रण से बने रंग वातावरण में गर्मी का आभास देते हैं। इन्हीं रंगों की सहायता से वस्तु स्थिति को भ्रामक भी बनाया जा सकता है।

l iuk e jx –

अगर आप अपने सपनों में रंग भरना चाहते हैं तो रंगीन टीवी देखिए। जी हां वैज्ञानिकों ने अब एक शोध में यह पाया है कि ब्लैक एंड व्हाइट टीवी देखने वालों में सपने भी बेरंग होते हैं और ऐसे लोग अपने सपनों में रंग नहीं भर पाते। जापान में किए गए शोध में 1993 से 2009 के बीच 16 साल की अवधि में 1300 लोगों का दो बार साक्षात्कार लिया गया। इनसे पूछा गया कि उनके सपने किस रंग के होते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि 60 वर्ष की आयु वर्ग के पांच में से केवल एक व्यक्ति ने रंगीन सपने देखे हैं।

thou ij jx dk iHkko :

रंग मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव डालता है। प्राचीनकाल से यह विश्वास रहा है कि रंग का मानव के रोग मुक्ति से भी गहरा सम्बन्ध हैं। आज विज्ञान से लेकर मनोविज्ञान तक इस बात को स्वीकार करता है कि रंग मानव के मनोविज्ञान और मनोस्थिति पर व्यापक प्रभाव डालता है।

LokLF; ij jx dk iHkko :

मानव स्वास्थ्य पर रंगों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। आयुर्वेद चिकित्सा में शरीर के किसी भी रोग का मुख्य कारण वात, पित्त और कफ को माना जाता है। रंग चिकित्सा की मान्यता के अनुसार शरीर में हरे, नीले व लाल रंग के असंतुलन से भी रोग उत्पन्न होते हैं। इसलिए वात में रक्त विकार को हम हरे रंग के उपयोग से दूर कर सकते हैं। लाल प्रकाश रक्त में वृद्धि करने की क्षमता रखता है। कफ में सर्दी की अधिकता को हम लाल, पीले व नारंगी रंग के उपयोग से दूर कर सकते हैं और पित्त में गर्मी की अधिकता को हम नीले, बैंगनी रंग के प्रयोग से दूर कर सकते हैं। बैंगनी प्रकाश गंजापन दूर करता है। रंग तथा प्रकाश के चिकित्सा सिद्धान्त के अनुसार नीला प्रकाश पेट के कैंसर, आँख के रोग और स्त्रियों के गुप्त रोगों के लिए अत्यन्त लाभकारी है। यह अंधापन भी दूर करता है। पीला प्रकाश गुर्दे एवं यकृत के रोगों में लाभप्रद है।

jxk dk iHkko 'kjhj d vxk ij

jx	xfFk	fcVkfeu
लाल	लिवर	ए
नारंगी	थायरायड	बी 12
पीला	आँख की पुतली के भीतर की झिल्ली	बी
हरा	पिटयूचरी	सी
	पीनियल	डी
हल्का नीला (इंडिगो)	पैराथायरायड	ई
बैंगनी	प्लीहा	के

[kk| jx vkj iks"k.k –

हमें अपने भोजन में अलग–अलग रंगों वाले फल और सब्जियों को शामिल करना चाहिए। हमारे प्रतिदिन के खाने में फल ओर सब्जियों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। ये खाद्य पदार्थ उत्कृष्ट हृदय रोग और आघात को रोकने में सहायक हैं। ये खाद्य पदार्थ रक्त चाप, कैंसर, मोतियाबिंद और दृष्टि हानि जैसी बीमारियों से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

jxk dk puko :–

रंगों का चुनाव बहुत से पहलुओं पर निर्भर करता है प्रकाश की उपलब्धता, अपनी पसंद, कमरों का साईज आदि। कभी–कभी सही रंग का चुनाव जीवन को एक महत्वपूर्ण घुमाव दे देता है और कई बार अपने लिए विपरीत रंगों के प्रयोग से हम अनजाने ही मुसीबतों को बुलवा दे देते हैं।

bUnz/ku"k

परावर्तन, पूर्ण आन्तरिक परावर्तन तथा अपवर्तन द्वारा वर्ण विक्षेपण का सबसे अच्छा उदाहरण इन्द्रधनुष है। बरसात के मौसम में जब पानी की बूँदे सूर्य पर पड़ती हैं तब सूर्य की किरणों का विक्षेपण ही इंद्रधनुष के सुंदर रंगों का कारण बनता है। आकाश में संध्या के समय पूर्व दिशा में तथा प्रातःकाल पश्चिम दिशा में, वर्षा के पश्चात् लाल, नारंगी, पीला, हरा आसमानी, नीला तथा बैंगनी रंगों का एक विशालकाय वृत्ताकार वक्र कभी–कभी दिखाई देता है। यह इंद्रधनुष कहलाता है।

e[; lkr –

रंगों की उत्पत्ति का सबसे प्राकृतिक स्रोत सूर्य का प्रकाश है। सूर्य के प्रकाश में विभिन्न प्रकार के रंगों की उत्पत्ति होती है। प्रिज्म की सहायता से देखने पर पता चलता है कि सूर्य सात रंग ग्रहण करता है जिसे सूक्ष्म रूप या अंग्रेजी भाषा में **VIBGYOR** और हिन्दी में '' बैं जा नी ह पी ना ला'' कहा जाता है। इसे ''बैं नी आ ह पी ना ला'' भी कहते हैं। (यहाँ 'आ' आसमानी के लिए है) जो इस प्रकार हैं :–

बैंगनी (violet), जामुनी (indigo), नील (blue), हरा (green), पीला (yellow), नारंगी (orange), लाल (red)

jx dk fl)kUr

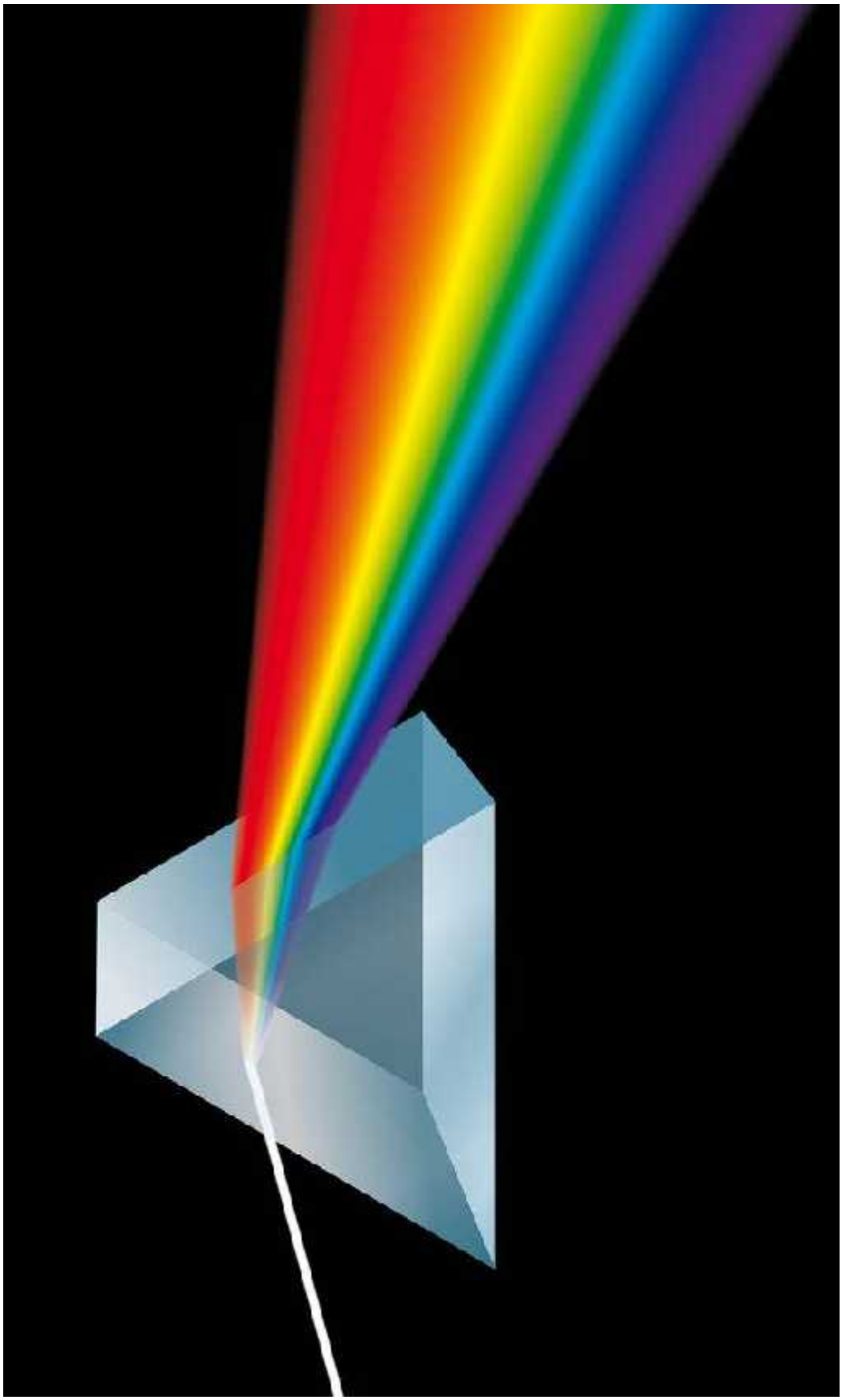

jxk dk fl)kUr –

मनुष्य में रंगों की उत्पत्ति एवं उनके नियम को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध किया है। हमारे हर कार्य में रंगों का निष्पादन आवश्यक हो गया है, चाहे हम कार्य के किसी भी क्षेत्र से संबंध रखते हों।

मुख्य रूप से रंगों के दो सिद्धान्त हैं –

अ. प्रकाश का सिद्धान्त

ब. पिगमेण्ट का सिद्धान्त

इसके अलावा भौतिक विज्ञानियों, जन्तुवनस्पति विज्ञानियों, मनोविज्ञानियों एवं रसायन विज्ञानियों ने भी अपनी–अपनी दशाओं में रंगों का महत्व का मूल्यांकन किया है। इन्होंने रंगों से प्रेरित होकर अपने अपने क्षेत्रों में इसका व्यापक उपयोग भी किया है।

v- izdk'k dk fl)kUr :

प्राथमिक तीन प्रकाश किरणों लाल, हरा एवं नीला इन्हें आपस में मिलाने पर निम्न रंग बनते हैं –

लाल + हरा = पीला

नीला + हरा = नीलाभ हरा

नीला + लाल = जामुनी

इसके अलावा, लाल + पीला = नारंगी

हरा + पीला = पीलाभ हरा

लाल + हरा = पीला

Primary Colour

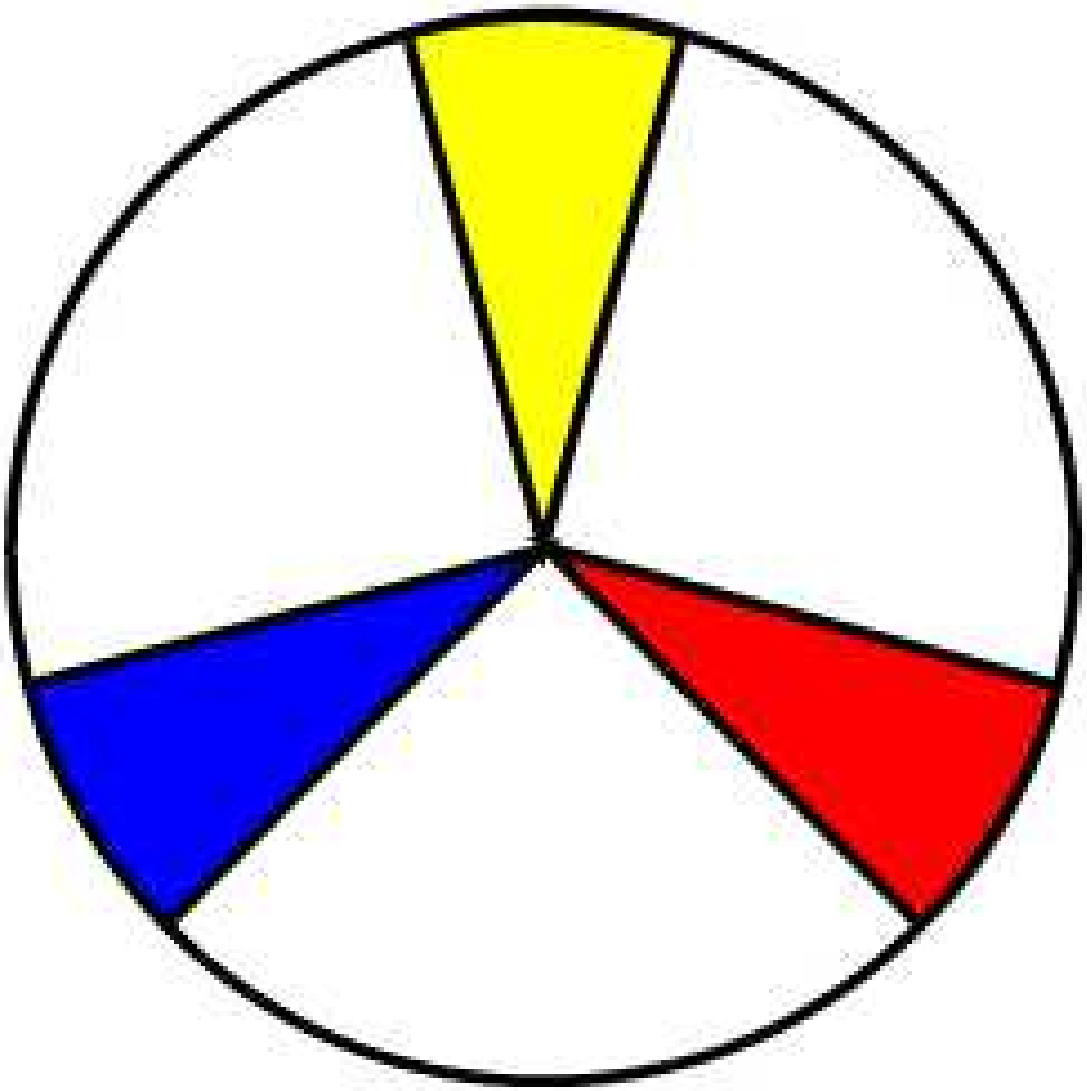

BASIC COLOR WHEEL

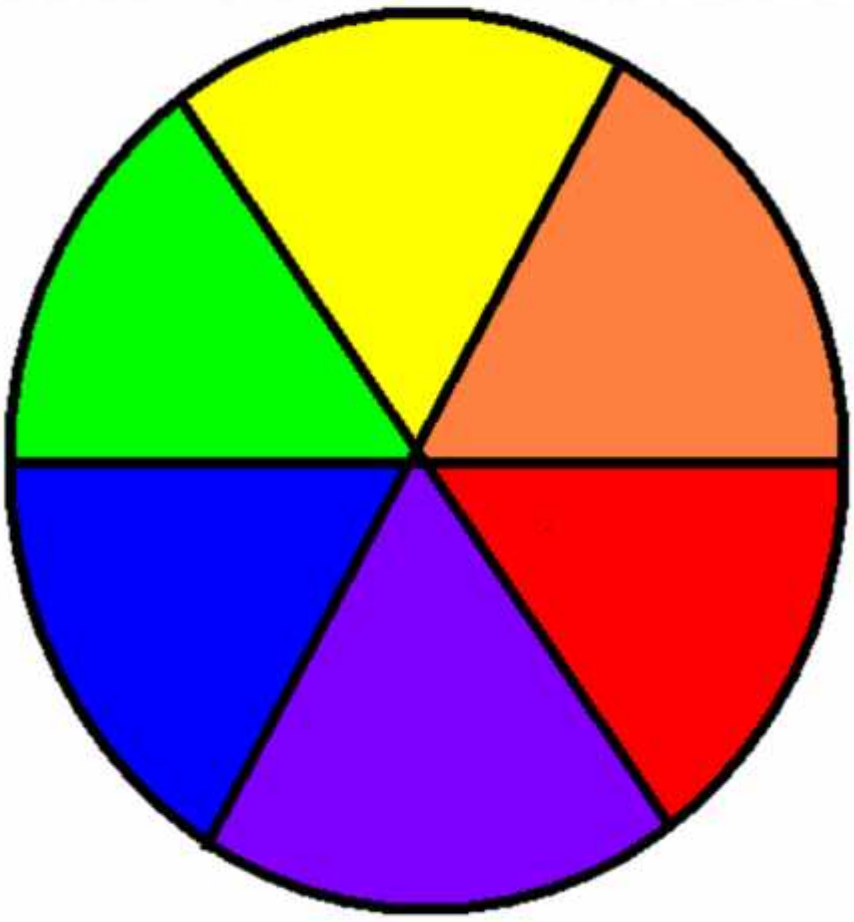

इत्यादि । तीनों प्राथमिक रंगों को आपस में मिलाने पर सफेद प्रकाश बनता है। प्रकाश की इन किरणों या तरंगों का अध्यारोपण होता है इन्हें धनात्मक परिणाम भी कहा जाता है क्योंकि प्रकाश को प्रकाश के साथ जोड़ा जाता है, अतः प्रकाश की वृद्धि होती है। प्रकाश किरणें परावर्तन के नियम का पालन करती है। प्रकाश के नये सिद्धान्त के अनुसार लाल+नीला =मेजेण्टा लिया गया है, इस सिद्धान्त को C, M, Y व C, M, Y, K की कहते हैं।

c- jxd.k ¼jtud½ dk fl)kUr

इस पिगमेण्ट के अनुसार तीन प्राथमिक रंग इस प्रकार से है। लाल, पीला, एवं नीला। अन्य रंग जो – मिश्रण से तैयार होते वो इस प्रकार है –

लाल + पीला = नारंगी

लाल + नीला = बैंगन

पीला + नीला = हरा

इसके अलावा, बैंगनी + हरा = लाल–बादामी गेरूआ

हरा + नारंगी = नींबू पीला

हरा + बैंगनी =जैतूनी हरा

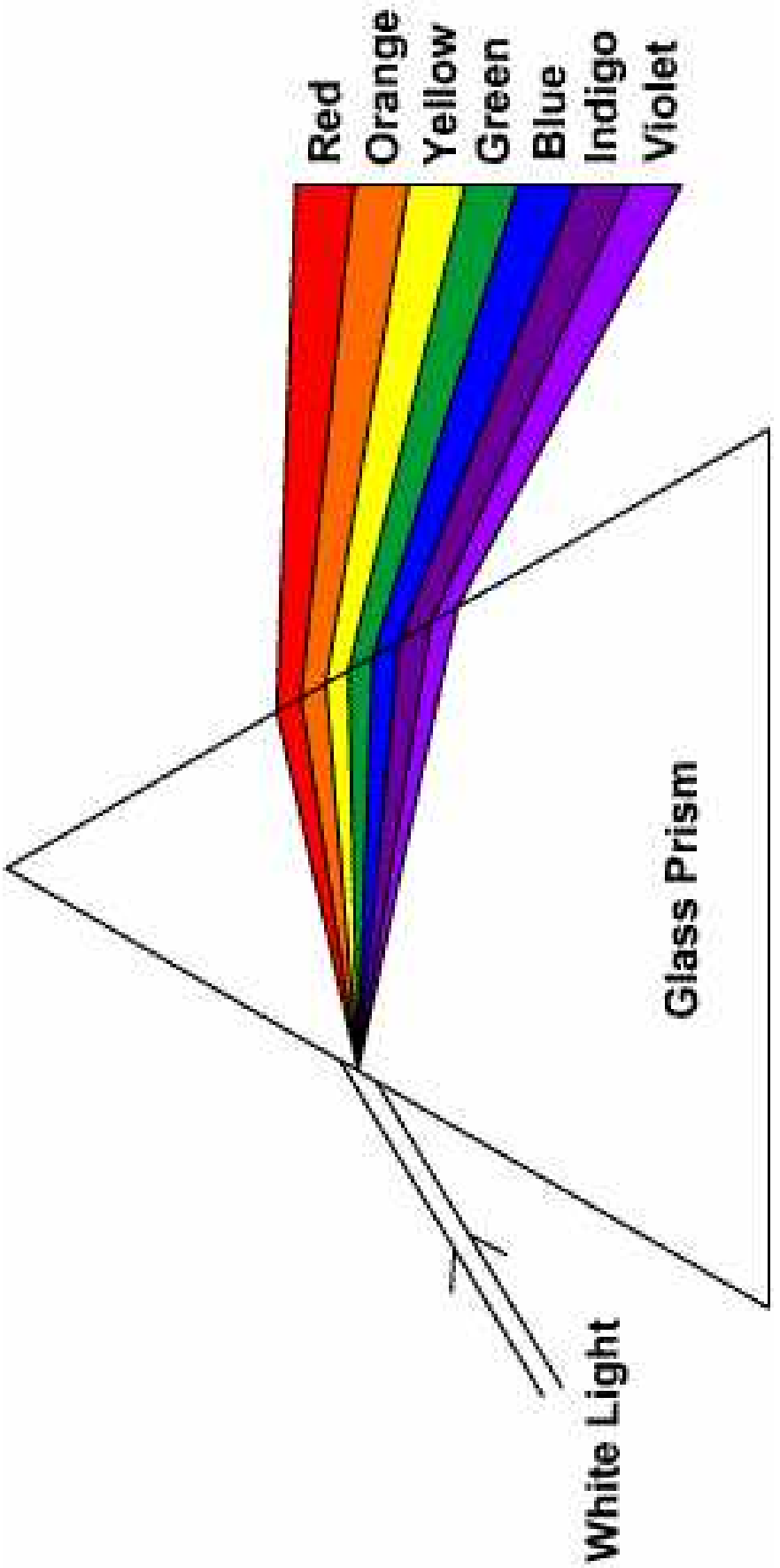
Red
Orange
Yellow
Green
Blue
Indigo
Violet
Glass Prism
White Light

इत्यादि रंग बनते हैं। तीन प्राथमिक रंगों को आपस में मिलाने पर मटमेला सा काला रंग प्राप्त होता है। यहां ऋणात्मक रूप से प्रकाश द्वारा प्रकाश का अवशोषण होता है। रंगाई की क्रिया में रंग एक–दूसरे के प्रभाव को कम या ज्यादा करते हैं।

दोनों सिद्धान्तों में प्राथमिक रंगों से बनने वाले मिश्रण क्रमशः माध्यमिक एवं तृतीयक यौगिक कहलाते हैं। रंगों को रंगों द्वारा ही पूरकता प्रदान की जाती है। रंग एक दूसरे के सम्पूरक होते हैं।

हमने देखा कि विभिन्न वस्तुऐं एक प्रभाव उत्पन्न करती है, जब प्रकाश की तरंगे उस पर पड़ती हैं। इनमें से वस्तु के प्रकार व रचना के अनुसार कुछ किरणें परावर्तित हो जाती है, कुछ आंशिक रूप से अवशोषित हो जाती है, कुछ किरणें वस्तुओं द्वारा प्रेषित हो जाती हैं। परावर्तित एवं प्रेषित किरणें, सीधे पड़ने वाले किरणों से भिन्न होती है वस्तु के स्वयं का रंग भी अन्य रंगों से प्रभावित होता है। रंगीन वस्तुऐं अपना शुद्ध रंग, दृष्टिगत सफेद रंग से अवशोषित करती है। जब प्रकाश किसी वस्तु पर पड़ता है तो, वस्तु अपना रंग, सफेद रंग के अवशोषण रहित क्षेत्र से ग्रहण करती है। सफेद प्रकाश के इन अवशोषित व अवशोषण रहित क्षेत्रों को आपस में एक दूसरे का अनुपूरक कहा जाता है। यह हमेशा रंग युग्मों के रूप में सक्रिय रहते हैं। इनकी व्यापक छाप हमें प्राकृतिक रूपों– जल, इन्द्र धनुष, जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों आदि पर सूर्य का प्रकाश पड़ने पर स्पष्ट दिखाई देती है।

'kk/kkFkh }kjk jxd.k dk fl)kUr 'kk/k : i j[kk e i;Dr fd;k x;k gA

e'ky jx fl)kUr –

विभिन्न रंगों के लिये अनेक नाम दिये गये हैं उदाहरण नीले रंग को स्काई ब्लू नाम से भी बुला सकते हैं। पानी का नीला रंग नेवी ब्लू इत्यादि रंगों की यह सूची उपभोक्ता प्रिन्टर रंग रेंज, डिजायनर के लिये मुश्किल पैदा करती है। यदि हम रंगों को स्पेसीफाई करते हैं तो उन रंगों को पहचानने में हमें परेशानी नहीं

होगी। रंगों को उद्देश्य के द्वारा हम उनको अलग नहीं कर सकते हैं लेकिन उनकी यर्थाथता के आधार पर वर्गीकृत किया जाना चाहिये। जैसे– लाल रंग के विभिन्न ह्यू जिनको हम स्पेसीफाई या वर्गीकृत कर सकते हैं। इस तंत्र को क्रियान्वित करने में मुन्शेल सिस्टम और सी.आई.ई. का अधिकतम उपयोग किया जाता है। ओसवर्ल्ड सिस्टम जनमन फिजिकल रसायनशास्त्री विलियम ओसफाल्ड के द्वारा 1920 में लागू किया गया लेकिन यह मुन्शेल सिस्टम से आगे नहीं बढ़ पाया इसके पीछे रहने का कारण इसमें उन रंगों को शामिल नहीं किया जाना है, जो कि प्राथमिक है। वर्तमान समय में विभिन्न रंगों को सही तरीके से रखा जाता है जो कि टाई और पेंट निर्माणकर्ताओं के द्वारा किया जाता है। साथ ही आर्कीट्रेक्ट के द्वारा रंग का उपयोग किया जाता है। जो कि मुंशेल सिस्टम पर आवश्यक रूप से आधारित रहते हैं इस सिस्टम में रंगों को चार्ट के द्वारा समझाया जाता है जिसमें ह्यू की लम्बी रेंज रहती है जो कि वेल्यू और क्रोमा के आधार पर निर्धारित रहती है।

eU'ky flLVe – एक अमेरिकन वैज्ञानिक अल्वर्ट हेनरी मुंशेल के द्वारा सन् 1915 में लागू की गई। 1915 में इन्होंने रंगों का नामकरण दिया इन्होंने वाटर रंगों का उपयोग करके एक सफेद कागज पर छोटे रूमाल चौखने में रंगों के उनके ह्यू के आधार पर रखा जो कि मुन्शेल सिस्टम कहलाता है। मुन्शेल ने तीन आयाम रंगों का उपयोग किया इनमें प्योर बलैक नीचे की तरफ और प्योर व्हाईट ऊपर की तरह रखा लाल, नीला, हरा तीनों घेरे के एक निश्चित समय पर रखे गये। क्षैतिज अवस्था में वाये से दांयें ब्ल्यू, परपल, रेड का उपयोग किया गया है।

मुन्शेल सिस्टम में प्रत्येक रंग के तीन पैरामीटर होते हैं – ह्यू, क्रोमा वेल्यू जो कि रंग के तीन आयामों से लागू होते हैं। मुन्शेल रंग चार्ट द्वारा रंगों को ह्यू, वेल्यू और क्रोमा के आधार पर किया जाता है।

1. eU'ky oY; – मुन्शेल वेल्यू से तात्पर्य रंगों की चमक और गहरे पन से है जो कि वर्टीकल रेक्टेन्गल से निर्धारित किया जाता है। मुन्शेल वेल्यू स्केल में काले

से सफेद तक रंगों को रखा गया है जिसमें रंग 10 नम्बर पर और ग्रे के विभिन्न शेड बीच में पाये जाते हैं।

2. eU'ky á – मुन्शेल ह्यू में सेकेण्ड पैरामीटर विभिन्न ह्यू को दर्शाते हैं रंगों को निर्धारित करते समय मुन्शेल ने अपने चार्ट के आधार पर यह निर्णय लिया कि पांच सैद्धान्तिक ह्यू है, और पांच वह ह्यू (वर्ण) है जो पांच वर्ण पाये जाते हैं इन्हें इन्टरमीडियेट वर्ण कहा जाता है।

1. पेन्सिल मुन्शेल रंग – लाल, पीला, हरा, नीला, बैंगनी

2. इन्टरमीडियेट मुन्शेल रंग – पीला–लाल, हरा–पीला, नीला–हरा, जामुनी–नीला, लाल–बैंगनी। इन सभी को 10 बराबर हिस्सों में बांट दिया जाता है जो कि रंग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

3. eU'ky Øek

तीसरा पैरामीटर मुन्शेल सिस्टम क्रोमा है जो कि रंग की क्रोमा तीव्रता, संतृप्तता ओर चमक को बताता है।

jxk d idkj vkj Jf.k;k –

रंगों की पांच श्रेणियां है –

1. ikFkfed J.kh & प्राथमिक रंगों के अन्तर्गत वे रंग आते हैं जिन्हें अन्य किसी भी रंगों को मिलाने से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इन्हें आधार ह्यूज कहा जाता है यह तीन रंग होते हैं ।

1. लाल – इसे अंग्रेजी शब्द **R** द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

2. पीला – इसे अंग्रेजी शब्द **Y** द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

4. नीला – इसे अंग्रेजी शब्द **B** से प्रदर्शित किया जा सकता है।

2. f}rh;d Jk.kh – दो प्राथमिक रंगों को समान मात्रा में मिलाने से जो ह्यू प्राप्त होते हैं उन्हें द्वैतियक रंग कहते हैं। यह द्वैतियक रंग तीन होते हैं लाल+नीला=बैगनी, पीला+नीला = हरा, लाल+पीला=नारंगी अर्थात् बैंगनी हरा तथा नारंगी।

3- e/;orhZ Jk.kh & प्राथमिक और उसके पड़ोसी द्वितीयक रंग के मिलने से मध्यमवर्ती वनता है। छः मध्यवर्ती ह्यू होते हैं – पीला–हरा, नीला–हरा, नीला–बैंगनी, लाल–बैंगनी, लाल–नारंगी।

उपरोक्त प्राथमिक रंग तीन, द्वितीयक रंग तीन और मध्यवर्ती रंग छः मिलकर रंग चार्ट तैयार करते हैं। जो वर्णक रंग कलर रंग चार्ट तैयार होता उसे वर्णक रंग कलर रंग चार्ट कहते हैं।

4- r`rh;d Jk.kh – दो द्वितीयक रंगों को मिलाने से तृतीयक रंग के ह्यू प्राप्त होते हैं। तृतीयक रंगों के अन्तर्गत उदासीन पीला, नीला और लाल आते हैं। तृतीयक पीला जो कि पीले धुंए के समान होता है, तृतीयक नीला स्लेटी नीले रंग के समान होता है और तृतीयक लाल पुरानी लाल ईंट के समान होता है। तृतीयक रंग इस प्रकार तैयार होते हैं।

1. तृतीयक पीला रंग = हरा रंग (नीला+पीला) + नारंगी रंग (पीला + लाल) = (B+Y) + (Y+R), B+Y + Y+R, पीले के दो भाग B+R = नीला+लाल= बैंगनी अर्थात् बैंगनी रंग पीले रंग का उदासीन भाग है व इससे बैंगनी से तैयार होने वाला रंग ग्रे पीला हो जाता है।

2. तृतीयक नीला रंग – जामुनी (लाल+नीला). हरा (पीला+नीला)

= (R+B) + (Y+B), R+B + B+Y

= B+B = नीला R+Y = नारंगी

अर्थात् स्लेटी नीला जो नारंगी के कारण मंद हो जाता है।

3. तृतीयक लाल रंग = नारंगी (लाल + पीला). जामुनी (लाल+नीला) = (R+Y) + R+B), Y+R, R+B=R+R= लाल, Y+B= हरा (अर्थात् हरा लाल रंग को मंद कर देता है) ।

prFkd jx dh J.kh &

दो तृतीयक रंगों के मिलने से चतुर्थक रंगों के ह्यू बनते हैं। चतुर्थक रंग में हरा, जामुनी, और नारंगी रंग आते है यह उदासीन रूप में रहते हैं।

1. चतुर्थ हरा = तृतीयक पीला + तृतीयक नीला

   (B+Y + Y+R) + (R+B + B+Y), (Y+Y+Y) + (B+B+B) + (B+R)

   पीला + नीला = हरा

   हरा + लाल + ऑलिव हरा

2. चतुर्थक जामुनी = तृतीयक नीला + तृतीयक लाल

   (R+B+B+Y) + (Y+R+R+B), (R+R+r) + (B+B+B) + (Y+Y)

   लाल + नीला = जामुनी

   जामुनी + पीला = मंद जामुनी या प्रून रंग

3. चतुर्थक नारंगी = तृतीयक लाल + तृतीयक पीला

   (Y+R+R+B) + (B+Y+Y+Y+R), (Y+Y+Y) + (R+R+R) + (B+B)

   पीला + लाल = नारंगी

   नारंगी + नीला = मंद नारंगी या बफ

रंग चक्र के बीच में यदि रेखा खींच दी जाये अर्थात् ऊपर के पीले रंग से रेखा नीचे के जामुनी रंग चक्र तक खींच दी जाय तो ह्यू दो भागों में वर्गीकृत हो जाते हैं। चक्र के दांयी ओर नीचे व मिश्रित रंग ठण्डे ह्यू कहलाते हैं ओर बांयी ओर के लाल नारंगी रंग के मिश्रित रंग गर्म ह्यू कहलाते हैं।

e/;orh jx

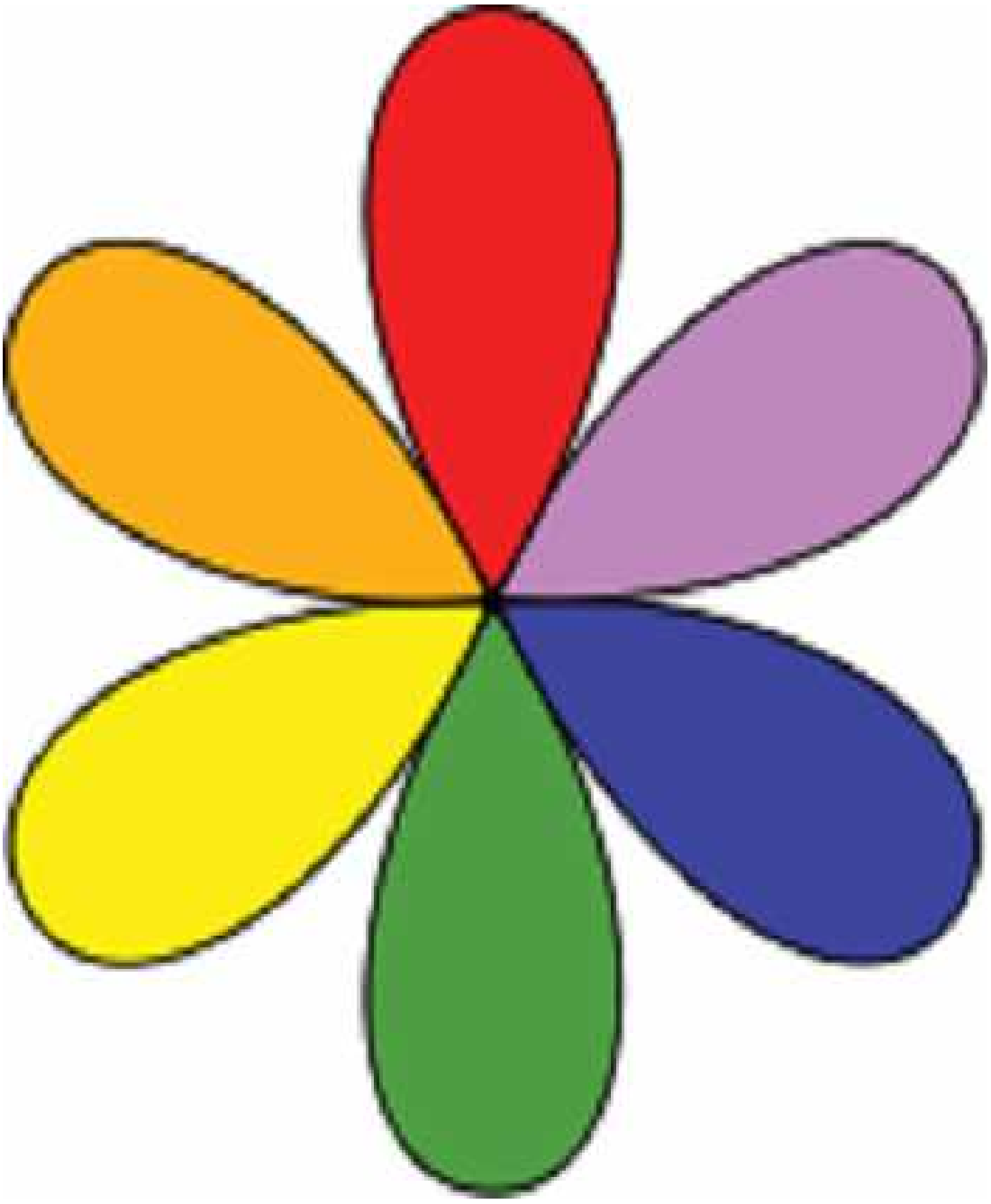

j:x vkj fMtkbu d: fl)kUr &

चूंकि रंगों का चयन रंग चक्र में कुछ स्थितियों में किया जाता है अतः इस बात का कोई प्रमाण नहीं होता कि इसका परिणाम हमेशा ही सुन्दर होगा। अतः रंग संयोजन हेतु डिजाईन के सिद्धान्तों का उपयोग करना आवश्यक होता है।

1. vuqikr & यह सिद्धान्त रंगों के उपयोग पर भी लागू होता है, इस सिद्धान्त का उपयोग वस्त्रों में रंग के वितरण में किया जाता है, रंग के समान वितरण वाले क्षेत्र थकान उत्पन्न करने वाले और अरूचिप्रद लगते हैं, यदि कमरे में दो रंगों का उपयोग करना है, तो वे समान अनुपात में उतने आकर्षक नहीं लगेंगे जितने असमान अनुपात में। यह अनुपात 2:3 हो सकता है। यही बात दो से अधिक रंगों पर लागू होती है। तीन रंग हो तो उन्हें 3:5:7 के अनुपात में इस्तेमाल किया जा सकता है। कई वर्षो से डिजाईनर इस नियम का उपयोग करते हैं कि रंग अनुरूपता तब अधिक आकर्षक लगती है, जब तक रंग का दबाव अधिक होता है, जब हल्के व गहरे वेल्यू का उपयोग एक साथ किया जाता है और जब चमकदार रंग का उपयोग थोड़ी मात्रा में किया जाता है। यह ध्यान देने की बात है कि प्रकृति में भी इसी नियम का उपयोग किया जाता है।

प्रकृति में वृहत क्षेत्र में नीले और हरा रंग का उपयोग होता है जो कि शांत रंग और चमकदार रंग थोड़ी मात्रा में दबाव उत्पन्न करता है, जैसे– फूलों में और छोटी चिड़िया के समूह में। आजकल इसी नियम का उपयोग किया जाता है, किन्तु साथ ही विशिष्ट अवसरों पर चमकदार रंगों का भी उपयोग किया जाता है।

रंगों की तीव्रता भी असमान होनी चाहिये एक ही मान के दो रंग उतने अच्छे नहीं लगेंगे जितने असमान मानों के।

vuikr

2. l:r|yu & रंगों में संतुलन के बिना विश्राम का अनुभव नहीं हो पाता यह संतुलन क्षेत्र के नियम पर आधारित है इसके अनुसार हल्के रंग अधिकतम क्षेत्र में इस्तेमाल होना चाहिये। स्लेटी या तटस्थ रंग इसके बाद के अधिकतम क्षेत्र में और गहरे या चटकीले रंग न्यूनतम क्षेत्र में।

रंगों के वजन की भिन्न–भिन्न मात्रा होती है गर्म रंग और गहरे रंग भारी अनुभव होते हैं, अपेक्षाकृत हल्के और ठण्डे रंगों के साथ ही समान तीव्रता वाले विभिन्न ह्यू भी एक–दूसरे के साथ संतुलन नहीं करते हैं।

चटकीले रंग के क्षेत्रों का वितरण सारे कमरे में होना चाहिये ताकि तटस्थ पृष्ठभूमि को वे जीवान्त बना सकें।

हम प्रकृति में भी इसी नियम का अनुसरण देखते हैं आसमान और झील, सागर आदि में हम हल्का नीला रंग विशालतम क्षेत्रों में देखते हैं अधिक चटकीले हरे पेड़, पौधे हम अपेक्षाकृत कम क्षेत्रों में देखते हैं, सुन्दर रंग बिरंगे फूल हम न्यूनतम क्षेत्रों में देखते हैं उदाहरण– शुद्ध पीला रंग, नीला रंग की अपेक्षा अनुभव करने में हल्का लगता है, अतः चमकदार नीले रंग की थोड़ी मात्रा को पीले रंग की बड़ी मात्रा के साथ उपयोग में लाने से संतुलन बनाया जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि रंगों में संतुलन लाने हेतु रंगों की विविधता अथवा मान और तीव्रता में अंतर होना आवश्यक है। उदाहरण– यदि हम लाल–नारंगी के साथ गहरे बादामी रंगों को प्रयुक्त करते हैं तो रंग योजना नीरस रहेगी। किन्तु यदि एक विपरीत रंग जैसे– नीला, हरा इसमें ले लेते हैं तब संतुलनकारी रंग के कारण रंग योजना अधिक आकर्षक हो जाएगी।

3- y; & लय काव्य, संगीत, नृत्य का महत्वपूर्ण सिद्धान्त होता है, रंगों के कुशल उपयोग से लय संभव है। यह लय रंगों की पुनरावृत्ति से उत्पन्न की जा सकती है। उदाहरण– यदि पर्दो में दो या तीन रंगों के नमूने है, तो उन रंगों की आवृति कमरे के अन्य उपकरणों में हो सकती है। साथ ही एक सुन्दर, हल्के हरे रंग का गले का हार बहुत मंद दिखाई देता है, किन्तु यदि इसी हरे रंग को

परिधान में कहीं भी दोहराया जाता है, तो गले के हार का रंग अधिक आकर्षक दिखाई देता है।

रंगों को अच्छी तरह से उपयोग में लाकर दोहराने से ड्रेस में एकता और रंग संतुलन प्राप्त किया जा सकता है, साथ ही रूचि उत्पन्न की जा सकती है। रंग या रेखा का बहुत अधिक दोहराव करने में एकरसता आ जाती है, और इसका परिणाम सुखद नहीं रहता और असंगठित भावना उत्पन्न करती है।

इन रंगों की तीव्रता में अंतर कर घर के अन्य कमरों में भी इन्हें विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त किया जा सकता है। इससे सम्पूर्ण घर की सज्जा में लय आ जाएगी, संक्षेप में यदि ग्रहिणी रंग ह्यू, वेल्यू या तीव्रता में क्रमिक अंतर रखे और इनका चतुराई से उपयोग करें तो वह लय का प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। ऐसी लय उतनी ही कलात्मक और आनन्ददायक लगती है, जितना एक नृत्यांगना का नृत्य या एक नदी का कलकल प्रवाह।

4. cy & किसी भी व्यवस्था को आकर्षक बनाने हेतु आवश्यक है कि उसमें कुछ विपरीतता का उपयोग किया जायेगा उतना ही अधिक उत्तेजक और नाटकीय प्रभाव उत्पन्न होगा फिर भी बहुत अधिक विपरीत रंगों का उपयोग करने में भ्रम उत्पन्न होता है, और एकता का अभाव उत्पन्न होता है। बड़े–बड़े काले और सफेद रंग के चौकोर आकार के फर्श पर चलने से और इसी प्रकार के अन्य विपरीत रंग के संयोगों से असुरक्षित भावना उत्पन्न होती है।

विपरीत ह्यू का उपयोग करने के अतिरिकत, विभिन्न वेल्यू या तीव्रता वाले समान रंगों का उपयोग करके भी उत्पन्न किया जा सकता है।

कमरे में प्रवेश करते ही यह आभास होना चाहिये कि इसमें एक रंग प्रधान है। उदाहरणार्थ– यदि पीला रंग प्रधान है, तो लाल और नीले रंग गौण हो सकते

है, यदि पृष्भूमि में हल्के या तटस्थ रंग का उपयोग किया गया है, तो एक चटकीला रंग जैसे– लाल, पीला, बल हेतु प्रयुक्त हो सकता है।

इसी प्रकार बल हेतु यदि किसी व्यक्ति का त्वचा का रंग गहरा है तो उसे हल्के रग का वस्त्र पहनना चाहिये यदि त्वचा का रंग गोरा है तो उसे वस्त्र गहरे रंग का जैसे काला या गहरा, चॉकलेटी हो सकता है।

5- vu:irk & रंग व्यवस्था में अनुरूपता को केवल तब प्राप्त किया जा सकता है, जब उसमें एकता की भावना हो, जब रंग इस प्रकार दिखाई दें कि वह साथ–साथ है। रंगों को इस प्रकार संयोजित करने की आवश्यकता होती है कि उसमें अनुरूपता के साथ–साथ रूचि भी उत्पन्न हो।

jax ds euksoSKkfud izHkko

xeZiu ;k B.Mkiu – ऐसे रंग जिसमें पीला या लाल रंग की मात्रा मिली हुई होती है गर्म रंग कहलाते हैं व जिन रंगों में नीले रंग की मात्रा मिली हुई होती है, ठण्डे रंग कहलाते है। हरा जामुनी रंग गर्म और ठण्डे रंगों के मिश्रण से बनते हैं। पीला मिश्रित हरा रंग गरम रंग के अन्तर्गत आता है। जबकि नीला मिश्रित हरा रंग ठण्डा होता है। उसी प्रकार लाल जामुनी गरम और नीला जामुनी ठण्डा रंग होता है।

किसी भी रंग की रंग योजना में या तो रंग या ठण्डे रंग की प्रमुखता रखी जाती है। क्योंकि दोनों की बराबर मात्रा अनाकर्षक दिखाई देती है। सभी गर्म रंग एक दूसरे के अनुरूप होते हैं। क्योंकि ये सभी पीले ओर लाल रंग के परिवार से संबंधित होते हैं। इसी प्रकार ठण्डे रंग एक दूसरे के मित्र समान होते है। क्योंकि यह नीचे से संबंधित है।

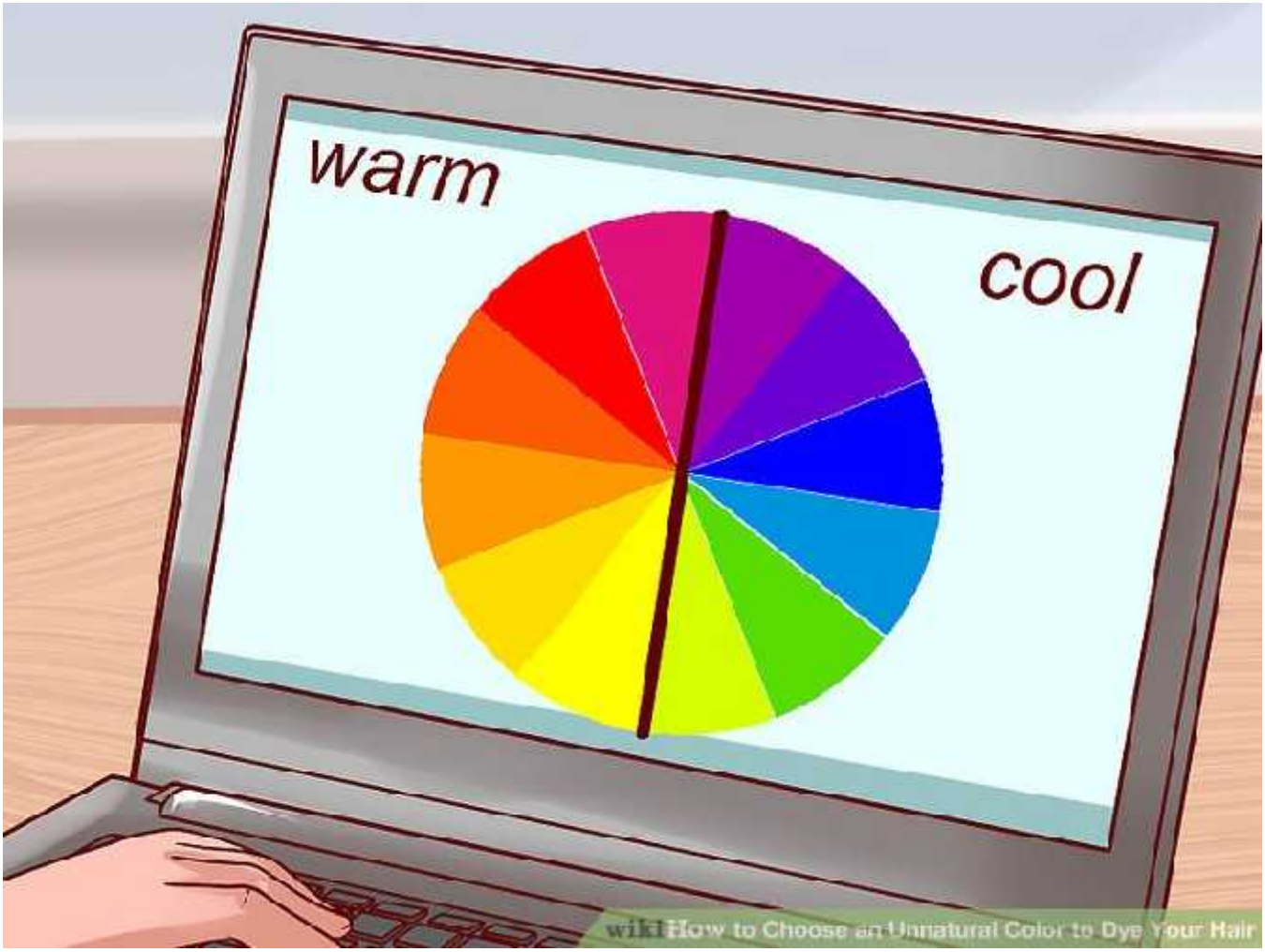
warm
cool
wikiHow to Choose an Unnatural Color to Dye Your Hair

Hkkjhiu vkj gYdkiu –

मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों में रंग के भारीपन और हल्केपन को बताया गया है। रंग शास्त्री सामान्यतः इस बात से सहमत हैं कि नीला और जामुनी रंग सभी रंगों में सबसे हल्का रंग है। हरा रंग लाल और पीले रंग की अपेक्षा थोड़ा कम भारी होता है जबकि लाल और पीला रंग सबसे भारी होते है। जब रंग ग्रे होते हैं, तो वजन में समान दिखाई देते हैं।

vkxs vkus okys o ihNs gVus okys jax –

मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि रंगों में वास्तव में आगे आने व पीछे हटने का गुण होता है। गर्म ह्यू वाले रंग आगे आने वाले होते हैं, और ठण्डे ह्यू वाले रंग पीछे हटने वाले होते हैं। सबसे अधिक आगे आने वाला रंग पीला होता है, फिर से क्रमशः नारंगी, लाल, हरा, जामुनी, आता है सबसे कम आगे आने वाला रंग नीला है।

jaxksa dk HkkoukRed izHkko –

गहन अध्ययन से यह निश्चित हो चुका है कि रंगों का भावनात्मक प्रभाव मानव जीपन पर पड़ता है। एडीसन के अनुसार– ''रंग हर भाषा बोलते हैं'' अतः रंगों के चुनाव द्वारा भी किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता चलता है। हम देखते हैं कि सामाजिक जीवन में व्यक्ति विभिन्न रंगों का उपयोग करते हैं रंगों का संवेगात्मक प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। रंग किसी परिवार के घरेलू वातावरण को उल्लासित अथवा उदास बनाने में सक्षम होते है। अतः कुशल आंतरिक सज्जाकार रंगों के भावनात्मक प्रभावों को ध्यान में रखकर ही गृह सज्जा योजना बनाते हैं। एक कुशल गृहणी को रंगों की यह विशेषता आंतरिक सज्जा का आयोजन करते समय ध्यान में रखनी चाहिये अन्यथा वह अनजाने ही घरेलू वातावरण को सुस्त या उदास बना सकती है।

विभिन्न व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने के पश्चात् ही शोधार्थी रंगो के साथ प्रभावित करने वाले कारको का सम्वन्ध सिद्ध कर सकेगी।

रंगो को प्रभावित करने वाले कारक इस प्रकार है –

1. व्यक्तित्व
2. आयु
3. लिंग
4. जन्म–क्रम

इस प्रकार शोधार्थी द्वारा समय का ध्यान रखते हुये वाकी चरो को नियतित चरों के रूप में लिया।

0;fDrRo

0;fDrRo –

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के Personality की व्युत्पत्तिन लैटिन भाषा के 'Persona' नामक शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'भेष बदलने के लिये धारण किया गया मुखौटा अथवा आवरण।' इस अर्थ में व्यक्तित्व से तात्पर्य है व्यक्ति का वह बाहरी रूप या अभिव्यक्त व्यवहार जो दूसरों को दिखाई देता है।

हम अगर व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हैं तो हमारे सामने दो रूप आते हैं वाहय तथा आंतरिक वाहय निरीक्षण का विषय हो सकता है जबकि आंतरिक बहुधा छिपा हुआ रहता है, ई. डब्ल्यू. वर्गेस लिखते हैं।

एक परिभाषा में हम कह सकते हैं कि व्यक्ति वही है, जैसा अन्य व्यक्ति समझते हैं व्यक्ति के संबंध में अन्य व्यक्तियों के निर्णय होते हैं, उन्हीं में व्यक्तित्व अभिलक्षित होता है।

व्यक्तित्व वह विशेषता है जिसके कारण एक व्यक्ति की आदतें, भावनायें, विचार, मनोवृतियां आदि अन्य व्यक्तियों से भिन्न होती है व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यवहार की व्यापक विशेषता है प्रत्येक प्रकार के व्यवहार में स्नेह, घृणा, मित्रता, परिश्रम, चलना, फिरना, हंसना आदि उसका व्यक्तित्व अभिव्यक्त होता है व्यक्तित्व कोई पदार्थ नहीं है वह व्यक्ति की विभिन्न प्रकार की क्रियाओं का व्यापक विश्लेषण है।

व्यक्ति की विभिन्न विशेषताओं के समूह का नाम ही व्यक्तित्व है जैसे लम्बाई, रंग–रूप, चरित्र, प्रभावोह पादकता, मधुरता, सामाजिकता आदि।

व्यक्तित्व का कोई एक विशिष्ट गुण व लक्षण नहीं है व्यक्ति के पूर्ण व्यवहार की प्रणाली अथवा विधि उसके व्यक्तित्व की ओर संकेत करती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व अधिकांशतः उसके आचरण पर निर्भिर करता है जो वह सामाजिक स्थिति के हिसाब से करता है। उसका अभिनय इस सामाजिक स्थिति में उसका व्यक्तित्व दर्शाता है, परनतु व्यक्ति को केवल व्यक्ति के आचरण से ही नहीं बल्कि उसके

कार्यो की प्रेरणाओं और प्रयास को भी देखने की चेष्ट करनी चाहिये। समान प्रतीत होने वाले व्यवहार के भिन्न–भिन्न अर्थ हो सकते हैं और बहुत भिन्न दिखाई पड़ने वाले व्यवहार एक ही स्रोत से निःसृत हो सकते हैं।

ifjHkk"kk,¡ –

एम.एन. मन (1953) के शब्दों में – ''व्यक्तित्व की परिभाषा उस अतिविशेषतापूर्ण संगठन के रूप में की जा सकती है जिसमें व्यक्ति की शरीर संरचना, व्यवहार के ढंग, रूचियां, अभिवृत्तियां, योग्यतायें तथा प्रवीणतायें सम्मिलित होती हैं।''

ड्रेवर के अनुसार– ''व्यक्तित्व'' शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गतयात्मक संगठन के लिये किया जाता है जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान–प्रदान में व्यक्त करता है।''

रेक्सरोड़ के अनुसार – ''व्यक्तित्व समाज द्वारा स्वीकृत और अस्वीकृत गुणों का समुच्चय है।''

बुडवर्थ के शब्दों में– ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण हैं।''

प्लेटो के शब्दों में – ''व्यक्तित्व किसी आंतरिक द्रव्य का बाहरी रूप है।

0;fDrRo d¡ i¡dkj

परिधान की दृष्टि से व्यक्तित्व को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है –

1. नाटकीय व्यक्तित्व

2- स्त्रियोचित व्यक्तित्व

3- क्रीडात्मक व्यक्तित्व

1. ukVdh; 0;fDrRo – नाटकीय व्यक्तित्व वाले व्यक्ति धीरे–धीरे कार्य करने वाले प्रभावशील तथा गहरी आवाज के धनी रहते हैं अतः इन्हें बड़ी छींट तथा विपरीत रंगों वाले वस्त्रों का उपयोग करना चाहिये।

2. fL=;kfpr 0;fDrRo – स्त्रियोचित व्यक्तित्व में ठिगने घुंघराले वालों वाले, शीघ्र कार्य करने वाले प्रसन्नचित लेकिन नाजुक व्यक्ति होते हैं। इसलिये इनको हल्के छींट तथा हल्के रंगों के वस्त्रों का उपयोग करना चाहिये।

3- ØhMkRed 0;fDrRo & क्रीडात्मक व्यक्तित्व में सरलता से कार्य करने वाले तथा युवकों चित व्यक्तित्व वाले व्यक्ति आते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति लम्बे होते हैं तो गहरे रंग तथा चैक के रंगों के वस्त्रों का उपयोग कर सकते हैं। वैसे बड़े फूलों की डिजाइन तथा विपरीत रंग का उपयोग करना चाहिये।

lkekftdrk d vk/kkj ij 0;fDrRo d oxhdj.k&

व्यक्तित्व के प्रारूपों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण युग का है। सामाजिकता के आधार युग ने व्यक्तित्वों के दो प्रारूप माने हैं। बर्हिमुखी और अर्न्तमुखी।

1. cfgeqZ[kh – ये अन्य व्यक्तियों में अधिक रूचि लेते हैं ये अपने स्वभाव के अन्य लोगों के साथ मिलना–जुलना पसन्द करते है। ये यथार्थवादी होते हैं और जीवन की परिस्थितियों का वस्तुगत रूप में सामना करते हैं, ये अपने चारों ओर के सामाजिक कार्यो में भाग लेने को सदैव तैयार रहते है। सामाजिक आदान प्रदान में ये मुक्त होकर भाग लेते हैं। ये भावना प्रधान होते हैं शीघ्र निर्णय करते हैं और निर्णय पर तत्काल अमल करते है।। ये व्यवहार कुशल और कर्मठ होते हैं। बर्हिमुखी वर्ग में व्यापारी, खिलाड़ी, अभिनेता तथा सामाजिक और राजनीतिक नेता आते हैं।

2. vUrZeq[kh – जैसा कि इनके नाम से स्पष्ट है। इन लोगो का मानसिक प्रवृति बाहर की ओर अर्थात अपने आस पास के लोगों की और न होकर अन्दर की ओर अर्थात् स्वयं अपनी ओर होती है। इस प्रकार ये आत्मकेन्द्रित और एकान्तप्रिय होते हैं इनमें विचार की प्रधानता होती है और ये चिन्तन मनन में लगे रहते हैं। ये विचारों में ही व्यस्त रहते हैं और दूसरों को अपने विचारों से प्रभावित करने की चेष्टा करते हैं। ये आदर्शवादी होते हैं और भविष्य में बहुत सोचते है। ये प्रायः सामाजिक परिवेश के अपेक्षा भौतिक परिवेश में अर्थात् पेड़–पौधों, मशीनों आदि में रूचि लेते हैं। ये शीघ्र निर्णय नही करते और काम की अपेक्षा विचार की ओर अधिक ध्यान देते हैं। अर्न्तमुखी वर्ग में वैज्ञानिक, दार्शनिक, कवित आदि आते हैं।

3. vHk;eq[kh&cfgZeq[kh rFkk vUrZeq[kh – ये दोनों प्रारूप एक दूसरे से विल्कुल विरूद्व है। परन्तु यथार्थ जगत में इस प्रकार के विशुद्व प्रारूप बहुत कम मिलते हैं। अधिकतर व्यक्तियों में बर्हिमुखी और अर्न्तमुखी दोनों की कुछ न कुछ विशेषतायें पायी जाती हैं। इन मध्यवर्ती व्यक्तियों को युग ने उभयमुखी (Ambiverts) विचारशील (Thining) अनुभूतिशील (Fulling) और मूल प्रकृत्यात्मक (Instinetive) प्रकपों में विभाजित किया।

t Ue Øe

tUe Øe

बच्चा जब परिवार में पैदा होता तो उसका एक निश्चित क्रम होता है। जिसे हम उसका जन्मक्रम कहते हैं। जैसे प्रथम बालक, द्वितीय बालक, तृतीय बालक–

जन्म क्रम का बच्चे के व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है जिसे विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग तरीकों से परिभाषित किया है। किसी का मानना है कि पहला बच्चा जिम्मेदार व छोटा बच्चा गैर जिम्मेदार होता है। जबकि कुछ मानते हैं कि छोटा बच्चा विभिन्न परिस्थितियों से सीखता है। इसलिये वह ज्यादा जल्दी परिपक्व होता है।

मनोवैज्ञानिक एडलर के अनुसार – 'व्यक्तित्व की कुछ निश्चित जीवन शैलियों का विकास परिवार के जन्मक्रम द्वारा निर्धारित होता है''। उनके अनुसार एक ही माता पिता व एक परिवेश में पलने के बावजूद भी सभी बच्चों का भिन्न भिन्न व्यक्तित्व होता है। क्योंकि हर बच्चे के क्रम के साथ माता–पिता का व्यवहार व सम्बन्धों में भी भिन्नता होती है।

एडलर के स्थितिक मनोविज्ञान के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि यह बात महत्वपूर्ण नहीं है कि किसी परिवार में बच्चे किस क्रम में जन्म लेते हैं। बल्कि महत्वपूर्ण वह परिस्थिति है जिसमें कि किसी बालक का जन्म होता है। और फिर उस परिस्थिति को बच्चा किस प्रकार समझने की कोशिश करता है।

iFke lUrku & एडलर के अनुसार पहले बच्चों को सम्पूर्ण प्यार और ध्यान व स्नेह प्राप्त होता है। वह सुरक्षित अस्तित्व का आनंद लाभ प्राप्त करता है। माता–पिता उसकी ओर आवश्यकता से अधिक ध्यान देते हैं। इसलिये वह अति संरक्षण का आदी हो जाता है। दूसरे बच्चे के साथ भी परिस्थिति, प्यार व ध्यान नियमित होता है। जिसके साथ समायोजन में परेशानी शुरू हो जाती है।

fo'k"krk;s

1. अपराधबोध की भावना।

2. दूसरे बच्चे के जन्म के साथ ही अपने प्यार का नुकसान महसूस।

3. संवेगात्मक रूप से दृढ़ व कठोर ।

4. उम्र से पहले समझदार व बचपन का गुम होने का भाव।

5. दोस्त के रूप में वह समायोजन करने वाला व दूसरों को बहुत कुछ देने वाला होता है।

6. वह ऐसी भावना रखता है जिससे कि सब कुछ मिलना चाहिये जैसे सव उसी का है।

7. गुस्सा प्रदर्शित करने के लिये दूसरों का अनादर करना।

nwljk cPpk –

दूसरी संतान पहली संतान से भिन्न होती है। पहली संतान के विरोध न करने पर वह सम्यक रूप से विकसित होता है। इसके साथ माता–पिता द्वारा पहले बच्चे के लालन पालन में की गई गलती दूसरे बच्चे के लालन पालन में सीख देती है। वह उन परेशानियों से मुक्त होता है। जो प्रथम संतान के सामने आती है। ये निरन्तर अपने से बड़े को पीछे छोड़ आगे और बेहत्तर प्रदर्शित करना चाहते हैं।

fo'k"krk;s –

1. अपरिपक्वता की भावना से मुक्त।

2. जीने के लिये एक विशेष उद्देश्य से मुक्त।

3. इनका बचपन का व्यवहार आलोचनात्मक व कूटनीति युक्त।

4. इसके संवेग या तो नियन्ति होते हैं या बहुत तीव्र।

5. स्वयं ईमानदार, अनुशाशित, निश्चयी भाव।

6. जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा से ओतप्रोत।

7. सोचने का तरीका मूल्यांकनात्मक होता है।

8. मलतवी व दूसरें से मिलकर काम निकालने वाला।

NkVh lrku

छोटी संतान परिवार को सबसे छोटा बच्चा होता है जो कि सबके लाड़ प्यार से प्रफुल्लित होता है। एडलर कहते हैं उसकी ओर सबका ध्यान होने के कारण वह सबसे बच्छा बनना चाहता है। और ऐसे बच्चे समस्यात्मक बालकों में ज्यादा आते हैं। क्योंकि उन्हें आवश्यकता से अधिक लाड़ प्यार दिया जाता है। जिससे उनके बिगड़ने का डर बढ़ जाता है।

वह अपनी जिम्मेदारियों से दूर व मुक्त होते हैं, उत्तरदायित्व का वहन नहीं करते और बड़े होने पर स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पाते, वयस्क होने पर भी माता से अधिक लगाव व निर्भर रहना चाहते हैं।

fo'k"krk –

1. इनके बचपन का व्यवहार आक्रामक व मद्दगार रहता है।

2. यह अधिक संवेदनशील व संवेगात्मक रूप से ढीले होते हैं।

3. उसे हमेंशा अपने से बड़ों से शिकायत रहती है।

4. माँ बाप व परिवार के प्रति झुकाव रहता है।

5. अपने जीवन में सबसे जयादा वाक्य बोलता है वह है मुझे कोई परेशानी नहीं।

vk;q ds vuqlkj jax izkFkfedrk esa fHkUurk %&

भिन्न–भिन्न आयु के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में भिन्नता होना एक स्वभाविक बात है। क्योंकि उनके अनुसार व्यक्ति की पसंद बदलती है। उसके खाने के स्वाद में परिवर्तन लाता है उसकी दिनचर्या बदलती है तभी हम उम्र का भार उसके व्यक्तित्व पर समझने लगते हैं और उसके मानसिकता में भी अंतर आता रहता है।

vk;q ds vuqlkj jax izkFkfedrk –

व्यक्ति के जीवन में रंग सम्बन्धी चयन प्रक्रिया में परिवर्तन आता रहता है। शोधार्थी के अनुसार तीन अवस्थाओं के व्यक्तियों की रंग प्रायमिकता का अध्ययन किया गया है।

1. **ckY;koLFkk**– व्यक्ति का बचपन हरे–भरे चटक रंगों से ओत प्रोत होता है। हम कह सकते हैं बच्चा हमेशा गहरा रंगों के प्रति आकर्षित होता है और वह अपने आस पास लाल, पीले, नीले रंगों को ही रखना पसन्द करता है। उसकी यह प्रायमिकता बड़े होने के साथ–साथ बदलती रहती है। बच्चों की पसन्द लाल, पीला, नीला, नारंगी रंग आदि। रंगों से ओत प्रोत होता है। हम कह सकते हैं बच्चा हमेशा गहरा रंगों के प्रति आकर्षित होता है और वह अपने आस पास लाल, पीले, नीले रंगों को ही रखना पसन्द करता है। उसकी यह प्रायमिकता बड़े होने के साथ–साथ बदलती रहती है। बच्चों की पसन्द लाल, पीला, नीला, नारंगी रंग आदि।

2. **fd'kksjkoLFkk** – यह अवस्था सुहाने सपनों की अवस्था है जिसमें बालक–बालिका अपनी इच्छानुसार रंगों का चयन करते हैं। इसमें दोनों ही तरह के रंगों के प्रति आकर्षण देखा जाता है। कभी मन करता है गहरे रंगों को धारण करें तो कभी मन हल्के और स्वप्निल रंगों को पसंद करता है

लड़कियां गुलाबी, पीले और धानी हल्के नीले रंग पसंद करती है जबकि वहीं लड़के गहरे, नीले और सफेद सिलेटी रंग पहनते हैं।

3- ik<koLFkk –

जहां पर किशोरावस्था में व्यक्ति कई सारे रंगों को प्रायमिकता देता है वहीं प्रौढावस्था में उसकीपसंद कुछ सिमट जाती है। इसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कुछ खास पसंदीदा रंगों को ही प्राथमिकता देता है और दैनिक कार्य मेंरंगों को विशेष स्थान देता है। जैसे गाड़ी का रंग, घर में रंग, बैडशीट, सोफा और पहनावे आदि में हर जगह रंगों से ही जुड़ा निर्णय लेता है। चूंकि यह अवस्था धैर्य और स्थायित्व की अवस्था होती है तो इसमें एक पसन्द बन जाती है जो कि व्यक्ति का रंगों के द्वारा ही व्यक्तित्व निर्धारित करती है।

अतः आयु का रंग प्राथमिकता पर एक गहरा प्रभाव होता है –

बालकों किशोरों और प्रौढ़ों के रंग की प्राथमिकता एकदम अलग–अलग होती है ये आपस में कुछ % तो मिल सकती है परन्तु पूरी बिल्कुल भी नहीं मिलती है। शुरूआत में माँ ही बच्चों के रंगों का चयन उनकी वस्तुओं का चयन सब वही निर्धारित करती है। परन्तु वो भी उनकी प्राथमिकता का ध्यान रखती है। क्योंकि छोटे बच्चे गहरे रंगों के प्रति ज्यादा आकर्षित होते हैं, और वह गहरे रंग के खिलौने और वस्त्रों को पसंद करते हैं।

जबकि इसके विपरीत किशोर अपने व्यक्तित्व के अनुसार हल्के रंगों को प्राथमिकता देने लगते हैं। पार्टी में हल्के रंग पहनना और हल्के रंग को साज सज्जा इसको पसंद आती है। ये कुछ समय हल्के रंग और कुछ समय गहरे रंग दोनों का तालमेल बनाकर चलते हैं।

वहीं प्रौढ व्यक्ति जैसे जैसे उम्र बढ़ने के साथ–साथ गहरे रंगों से हल्के रंगों को प्राथमिकता देना शुरू कर देता है। स्काई ब्लू, स्लेटी, ग्रे, क्रीम, ऐसे रंगों को प्राथमिकता देते हैं।

bld vfrfjDr 'kk/kkFkh }kjk vk;q o voLFkk nkuk dk v/;;u fd;k x;k gSA vkj 6 l 40 o"k dk oxhvUrjky e foHkkftr fd;k gSA

/ke d vuqlkj jxk dh ikFkfedrk e fHkUurk –

प्रत्येक धर्म के व्यक्तियों का उनके धर्मानुसार रंगों का उपयोग महत्व रखता है जैसे कि हिन्दु रीति रिवाज में सुहागन महिलाओं के लिये लाल रंग ओर मुस्लिम में हरा रंग शुभ माना जाता है। इसी प्रकार शोक के समय सफेद रंग पहनते हैं। ईसाई धर्म में शादी के समय सफेद रंग का लिबास पहना जाता है।

अर्थात् ये रंग अलग–अलग धर्म की पहचान भी बताते हैं। जिनको केवल देखकर ही हम उनके धर्म का अंदाज लगा सकते हैं।

रंग प्राथमिकता में व्यक्तित्व का अलग–अलग धर्म के अनुसार प्रभाव पड़ता है जैसे साधू हमेशा पीले, नारंगी रंग का चयन करता है जबकि एक उच्च्य कोटि का महात्मा सफेद रंग का। इसी प्रकार बुजुर्ग किसी मंदिर में जाते समय सफेद रंगों के कपड़ने पहनते हैं और नई नवेली दुल्हन की प्राथमिकता लाल रंग की साड़ी होती है।

इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने धर्म को श्रेष्ठ बताने में लगा रहता है। यहाँ तक कि देश विदेश के सम्मान सूचक राष्ट्रीय ध्वज का रंग भी उनके पहचान और सम्मान का प्रतीक होता है। जिससे हमें पता लग जाता है कि कहां देश का व्यक्तित्व है।

अतः रंगों की प्राथमिकता में धर्म के अनुसार भी विभिन्नता पाई जाती है।

fyx d vuqlkj jxk dh ikFkfedrk e fHkUurk –

ईश्वर ने स्त्री और पुरूष दो भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व का स्वामी बनाया हैं जिनके एक दूसरे के विपरीत पसंद एवं स्वभाव होते हैं, किसी को ज्यादा बोलना पसंद है तो किसी को कम, किसी को ज्यादा मीठा पसंद है तो किसी को ज्यादा

नमकीन, मीठा कम कहने का तात्पर्य वे एक दूसरे के साथ रहते भी भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व के होते हैं।

इसी प्रकार उनके रंग प्राथमिकता भी अलग–अलग होती है। महिलाओं को ज्यादातर गहरे रंग एवं भड़कीले रंग पसंद होते हैं जबकि पुरूषों को हल्के शांत रंग।

प्रत्येक स्त्री स्वयं में सौंदर्य व आकर्षण की प्रतिभूति है यदि संगमरमरी कौंध आँखों को चुधियाने का दम रखती है तो सांवला रंग भी मन मोहे बिना नहीं रह सकता यहीं व्यक्तित्व दूसरों को अपनी ओर खींचने का दम रखता है।

पुरूष अपने सुडौल गठीले शरीर को एक आकर्षण बिन्दु मानते हैं और सुन्दर रंगों का परिधान चयन उनके व्यक्तित्व में चार चांद लगा देता है।

महिला हो या पुरूष कोई भी रंगों की दुनिया से अछूता नहीं है। क्योंकि चारों तरफ जहाँ भी नजर जाती है ये रंग ही हमारे आस पास होते हैं बस भिन्नता होती है, इनके रूपों में कहीं ये सुन्दर परिधान में छिपा होता है तो कहीं घर की साज सज्जा में कहीं इनका उपयोग खाना में होता है तो कहीं फूलों में।

कहने का तात्पर्य हर लिंग में रंगों की प्राथमिकता भिन्न होना स्वाभाविक बात है।

jax p;u esa O;fDrRo dk izHkko &

व्यक्ति का व्यक्तित्व रंगों के चुनाव से प्रभावित होता है महिलायें ज्यादातर मनमोहक रंगों का चुनाव करती है जैसे– हल्का गुलाबी या पीला इत्यादि।

O;fDrRo dk jaxksa ls fj'rk –

रंग आपके खूबसूरत व्यक्तित्व का दर्पण ही नहीं सुरूचि और सलीकेपन का प्रतीक तथा आपकी पहचान के साधन और माध्यम भी है। रंगों से जुड़कर एक ओर जहां आपका व्यक्तित्व बाहरी दुनिया में निर्णायक मोड़ लेता है, वहीं दूसरी ओर

उसके माध्यम से आपका भीतरी संसार भी परिभाषित होता है। यही कारण है कि बहुधंधी क्षेत्रों में व्यस्त तथा सफलतम व्यक्ति रंगों का चुनाव विल्कुल ऐसे करते हैं जैसे किसी अपने मित्र का चयन। यदि आप स्वयं को गंभीर और दूसरे की नजर में सलीकेदार सिद्ध करना चाहते हैं तो आंखों में चुभने वाले चटख भड़कीले व शोख रंगों का चुनाव कभी भी न करें। दूसरों की नकल, फैशन की होड़ या दूसरों की पसंद के मुताबिक रंगों का चयन कई बार भारी दिक्कतें खड़ी कर देते हैं। इस चयन से आपकी मानसिकता और परिवेश के प्रति सजगता का भी प्रदर्शन होता है। शांत व सौभ्य रंग जहां आपकी सादगी और जीवन के प्रति गंभीरता को दर्शाएगें वहीं दूसरों के ऊपर प्रभावी असर भी छोड़ जायेगें। अतः जहां तक संभव हो अपने परिधानों में रंगों की फौज खड़ी न करें वरन सादे सुरूचिपूर्ण रंगों को भी महत्व दें। फैशन की रफ्तार के साथ–साथ अपने लिवासों की शैली आधुनिक दिखने के लिये अवश्य बदलें परल्तु रंगों का दामन न छोड़ें और न ही फूहड़ रंगों की गिरफ्त में उलझें।

gj jx dN dgrk g

gj j|x d|N dgrk g| &

yky –

यूँ तो सभी मनुष्यों को ये रंग पसंद होता है। परन्तु इस रंग को पसंद करने वालों की दुनिया कुछ अलग होती है। शारीरिक रूप से दुर्बल होने पर भी ये लोग आत्मिक रूप से सक्षम होते है, ये अपने जीवन का हर पहलू लोगों से खुला रखते हैं। बात–बात पर गुस्सा करना और उसका प्रदर्शन इनका स्वभाव होता है। लाल रंग पसंद करने वाले क्रोध, उत्साह, चुलबुले और भावनाओं से कमजोर होते हैं, परन्तु ये लोग रोमांटिक मूड के भी होते हैं पति और पत्नि का प्रगाढ़ सम्बन्ध होता है। सभी पसंद कर्ता अपने रंग को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रंग बताते है, इसका उपयोग शादी पार्टी की साजसज्जा में होता है।

uhyk –

अपने आप में भड़कीला रंग है नीला, परन्तु इसके हल्के रंग पुरूष वर्ग द्वारा पसन्द किये जाते हं। नीला रंग एक पृष्ठभूमि की तरह भी कार्य करता है। जीवन के उतार चढ़ाव में नीला और हल्का नीला अपनी अहम भूमिका निभाता है। इस रंग–पसंद करने वाले लोग अंर्तमुखी व्यक्तित्व के मालिक होते हैं। इनका दुनिया के रंगों से कम वास्ता रहता है, न जीवन की बातें खुल के सामने लाते हैं और न अपने आप से किसी से खुल के कुछ पूछते हैं। शान्त, सौम्य और शालीन प्रकृति के लोग होते हैं, इस रंग को पसंद करने वाले।

ihyk –

प्रकृति के मुख्य रंगों में सबसे चमकीला रंग पीला माना जाता है, शुभ कार्यों में इस रंग का विशेष महत्व है। इस रंग को पसन्द करने वाले धार्मिक पृवत्ति के होते हैं, उनके जीवन में ईश्वर में आस्था और विश्वास का विशेष स्थान होता है। पीला रंग यूँ तो बचपन में ज्यादा पसन्द किया जाता है। बच्चों के खेल खिलौने मं

ये रंग सर्वाधिक शामिल होता है। नयी नवेली दुल्हन के कपड़ों का रंग पीला होता है, इस रंग को मुख्यतः उभयमुखी लोग पसन्द करते हैं, जिनका अपना एक अलग संसार होता है। यह रंग ऊष्णता का भी प्रतीक माना जाता है, यह ऊर्जा भी प्रदान करता है। इस रंग को पसंद करने वाले क्षणिक क्रोधित स्वभाव के होते हैं, परन्तु कढ़े निर्णय क्षमता वाले भी होते हैं।

gjk –

प्रकृति के सुन्दर स्वरूप को देखने के लिये इस रंग से बेहतर कुछ नहीं, मन को हरा भरा कर देने वाला हरा रंग अपने आप में ऊर्जा देता है, आँखों को शीतलता प्रदान करता है, इसके उपरंग भी बहुत सुन्दर छबि के होते हैं। यूँ तो हरा रंग भी शीतल रंगों का एक रंग है, परन्तु ऊर्जा प्रदान करता है। बाल्यकाल में स्त्री व पुरूष अपने खेल खिलौने व कपड़ों के एक सुन्दर सजावट में प्रयोग लाते हैं। हम जब किसी हरे भरे पेड़ की तुलना करते हैं तो उसकी जीवन के यौवन काल को हरे रंग से जोड़ा जाता है। इस रंग को पसंद करने वाले व्यक्ति वाह्यमुखी होते है। यह कम तरंगों का रंग है, जिसकी तरंग क्षमता कम होती– नीला, हरा व बैंगनी शीत रंगों में शामिल हो तो जो व्यक्ति हरा रंग पसन्द करते हैं वह शान्त प्रकृति के व सरल स्वभाव के माने जाते हैं।

cxuh –

शीतलता के क्रम में बैंगनी रंग अपनी अहम् भूमिका निभाता है। परन्तु इसकी तरंग धैर्यता कम होती है। इसके उप रंग आँखों को बहुत ठण्डक देते है। इस रंग को पसंद करने वाले अपने व्यक्तित्व में सभी गुणों को शामिल करते है। जिससे यह न तो बर्हिमुखी न अंर्तमुखी प्रकृति के होते हैं। इनके व्यक्तित्व का मूल्य इनका स्वभाव होता है। अपने स्वभाव के कारण इनका समझौता, सामंजस्य और सहृदयता में मुख्य भूमिका होती है। परन्तु ये असानी से सबकी समझ में नहीं आते, इनका स्वभाव सभी के लिये कुछ हटके होता है। बैंगनी रंग लाल व नीले रंग का सम्मिश्रण होता है और इसका हल्का व गहरा रंग अपनी प्रकृति के कारण होता है।

ukjxh –

लाल व पीले रंग का मिला जुला रंग नारंगी होता है। यूँ तो देखा जावे इस रंग को हर अवस्था के व्यक्तियों द्वारा खूब पसन्द किया गया परन्तु बालक, बालिकाओं द्वारा ज्यादा चाहा गया नारंगी रंग गृह सज्जा में मुख्यतः उपयोग में लाया जाता है। इस रंग को पसंद करने वाले लोग कुछ विरोधी स्वभाव के भी होते हैं। जल्दी से किसी की बात का विरोध करना इनका स्वभाव बन जाता है।

●●●